5

आप भले तो जग भला

श्रीमन्नारायण

प्रस्तुत पाठ अत्यंत भाव-गंभीर तथा हृदय-स्पर्शी है। इस पाठ में जीवन जीने की एक दृष्टि दी गई है। लेखक ने विभिन्न दृष्टांतों, प्रसंगों और उद्धरणों द्वारा यह बताने का प्रयत्न किया है कि यदि मनुष्य स्वयं भला है तो उसे सारा संसार भला दिखाई देता है। भला होने से आशय है- सदैव दूसरों की अच्छाइयों को देखना, अपने अवगुणों पर भी ध्यान देना और हर परिस्थिति में खुश रहना। अपने निंदक का भी एहसानमंद होना और प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेम और नम्रतापूर्ण व्यवहार करना।

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हजारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चौंका। उसने जिधर नजर डाली, उधर ही हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखाई पड़े। उसकी आवाज की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में जोर-जोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और जोर से भौंका।

सब कुत्ते भी अधिक जोर से भौंकते दिखाई दिए। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा जोर-जोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अंत में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया। उसको भी हजारों कुत्ते दिखाई दिए। वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलाई। सभी कुत्तों की दुम हिलती दिखाई दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो आता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक जरूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला', 'आप बुरे तो जग बुरा।' अगर आप प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बरताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"

उन्होंने जरा देर सोचकर उत्तर दिया, "मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर जहर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, "लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।" दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बंद कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और। आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिन भर बुराई करते रहें। पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा :

निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै बिचारा।
आपन डुबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर 'निंदक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गई। हमारे मित्र तुरंत बिगड़कर बोले, "देखिए महाशय, यह आपकी सरासर गलती है। आइंदा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशय जी बड़े दुखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिए ही उठकर चले गए। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकांत में कहा, "देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?"

उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। बड़े प्रेम से बोले, "जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा! पर कोई मुहब्बत से पेश आए तब न! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।"

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और संतोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, "सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रय में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।"

पृथ्वीसिंह जरा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापूजी?"

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है। जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं। उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है।"

"मैं समझ गया, बापूजी!"– पृथ्वीसिंह ने मुस्कराकर कहा। आगे की कहानी यहाँ करने की जरूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है। उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था। बापू कड़ी–से–कड़ी आलोचना कर सकते थे और करते भी है, पर हँसकर मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।"

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है। उन्हें गाएँ पालने का शौक था। इसलिए गाएँ और नन्हे बछड़े मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार जोर की बारिश आने वाली थी। सभी गाएँ तो झोंपड़ी के अंदर चली गईं, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आए पर ज्यों–ज्यों उन्होंने जोर से खींचना शुरू किया त्यों–त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार से डालकर उसे झोंपड़ी की तरफ ले जाने लगी। बछड़ा चुपचाप कुटी के अंदर चला गया।

वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार–कुशल अवश्य थी और जब जानवर भी प्रेम की भाषा समझते हैं तो फिर मनुष्य होकर क्यों नहीं समझेंगे?

कल हमारे मित्र का रसोइया बिना खबर दिए ही चला गया। बेचारा करता भी क्या! सुबह से शाम तक उसके महाशय की डाँट खानी पड़ती थी। "तूने आज दाल बिलकुल बिगाड़ दी। उसमें नमक बहुत डाल दिया।" "अरे बेवकूफ तूने साग में नमक ही नहीं डाला।" "यह जली रोटी कौन खाएगा रे!" आदि की झड़ी लगी रहती थी।

जब कोई चीज जरा भी बिगड़ जाती तब तो उसे दिल खोलकर डाँटा जाता। पर अच्छा भोजन बनने पर कभी तारीफ के दो शब्द न बोले जाते। "वाह! तारीफ कर देने से उसका दिमाग चढ़ जाएगा।" मेरे मित्र कह देते। ठीक है! है तो वह भी आदमी ही। उसके भी दिल है। बेचारा कुछ रुपए का नौकर यंत्र नहीं बन सकता। तंग आकर भाग जाने के सिवा और क्या चारा था?

कहने का मतलब यह कि उनकी किसी से नहीं बनती- न मित्रों से, न ऑफिस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

उस पर भी मजा यह है कि वे अपनी जिंदगी और विचारों से पूरी तरह संतुष्ट हैं। वे मानते हैं कि उनका जीवन, आचार और विचार आदर्श हैं। दूसरे लोग जो उनका सम्मान नहीं करते, मूर्ख हैं। ग्रीस के महान संत सुकरात ने एक बात बड़े पते की कही थी, "जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।"

अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें। पर उनसे यह कहने का साहस कौन करे?

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. एक काँच के महल में कितने कुत्ते घुसे थे ?

(क) एक (ख) दो

(ग) एक हजार (घ) कई हजार

2. काँच का महल किसका प्रतीक है ?

(क) संसार (ख) अजायब घर

(ग) चिड़ियाघर (घ) सपनों का महल

3. "निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै विचारा।
आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे।"

– प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता कौन हैं ?

(क) कबीर दास (ख) रैदास

(ग) बिहारीलाल (घ) दादू

4. आदमी भूखा रहता है–

(क) धन का (ख) जन का

(ग) प्रेम का (घ) मान का

5. गांधीजी ने अहिंसा की तुलना सीमेंट से क्यों की है ?

(क) अहिंसा से मनुष्य एक साथ रहता है।

(ख) अहिंसा किसी को अलग नहीं होने देती।

(ग) अहिंसा सीमेंट की तरह एक-दूसरे को जोड़ कर रखती है।

(घ) अहिंसा में सीमेंट जैसी ताकत है।

(आ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में):

1. दो कुत्तों की घटना का वर्णन करके लेखक क्या सीख देना चाहते हैं ?
2. लेखक ने संसार की तुलना काँच के महल से क्यों की है ?
3. अब्राहम लिंकन की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या था ?
4. लेखक ने गांधी और सरदार पृथ्वीसिंह के उदाहरण क्या स्पष्ट करने के लिए दिए हैं ?
5. रसोइया ने बिना खबर दिए लेखक के मित्र की नौकरी क्यों छोड़ दी ?
6. "अच्छा हो, सुकरात के इस विचार को मेरे मित्र अपने कमरे में लिखकर टाँग लें।"- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

(इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

1. अपने मित्र को परेशान देखकर लेखक को किस किस्से का स्मरण हो आता है ?
2. दुखड़ा रोते रहने वाले व्यक्ति का दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना क्यों बेहतर है ?
3. 'प्रेम और सहानुभूति से किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।' — यह स्पष्ट करने के लिए लेखक ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं ?
4. लेखक ने अपने मित्र की किन गलतियों का वर्णन किया है ?
5. इस पाठ का आधार पर बताओ कि 'हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।'

(ई) आशय स्पष्ट करो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) शहद की एक बूँद ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाए एक सेर जहर के।

(ख) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।

(ग) जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है, पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करो :**

   नज़र, ज़ोर, हज़ार, नाराज़, ज़रूर, ज़रा, ज़िंदगी, तारीफ़, ऑफ़िस, सफ़ाई, फैशन, फ़न।

   उपर्युक्त शब्दों में 'ज़' और 'फ़' अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी से आए तत्सम शब्दों की ध्वनियाँ हैं। इन्हें संघर्षी ध्वनि कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करते समय हवा घर्षण के साथ निकलती है, जबकि 'ज' और 'फ' ध्वनि के उच्चारण में हवा रुकती है।

   निम्नलिखित शब्दों में अंतर समझते हुए उच्चारण करो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो-

जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा-सा)
राज (राज्य)	राज़ (रहस्य)
तेज (चमक)	तेज़ (फुर्तीला)
फन (साँप का फण)	फ़न (कला)

नोट : *आजकल इन शब्दों में* ***'नुक्ता'*** *का प्रयोग बहुत कम हो रहा है।*

2. **निम्नलिखित गद्यांश का पाठ करते समय इसका ध्यान रखो कि तिरछी रेखाएँ क्षणभर ठहराव का संकेत देती हैं। इसी के अनुसार इसे पढ़ो।**

   महात्मा गांधी ने/ पृथ्वीसिंह से कहा/ "सरदार साहब, /अगर आप सेवाग्राम में आकर /मेरे आश्रम में रह सकें / तभी मैं समझूँगा कि /आपने अहिंसा का पाठ /सचमुच सीख लिया है।"

   पृथ्वीसिंह जरा चौंकर बोले, /"आपका क्या मतलब बापूजी ?"/भाई, / मेरा आश्रय तो/एक प्रयोगशाला जैसा ही है/जिन लोगों की कहीं नहीं बनती,/अक्सर वे मेरे पास/आ जाते हैं। उन सबको एक साथ रखने में/मैं सीमेंट का काम करता हूँ/और वह सीमेंट/मेरी अहिंसा ही है।"

3. **निम्नलिखित विलोम शब्दों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करो :**

ध्वनि – प्रतिध्वनि   हिंसा – अहिंसा

क्रिया – प्रतिक्रिया   फल – प्रतिफल

4. **निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करो :**

(क) जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो आता है। (वचन बदलो)

(ख) दुखी होने का कोई कारण नहीं। (प्रश्नवाचक बनाओ)

(ग) रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। (विस्मयादिबोधक बनाओ)

(घ) वह अनपढ़ नौकरानी किताबें और कविताएँ लिखना नहीं जानती थी, पर व्यवहार-कुशल अवश्य थी। (लिंग बदलो)

(ङ) है तो वह भी आदमी ही। (सामान्य वाक्य बनाओ)

5. **निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो :**

आग बबूला होना, नुक्ताचीनी करना, टूट पड़ना, चुटकियाँ लेना, कोई चारा न होना

योग्यता-विस्तार

1. "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥"

कबीर की इन पंक्तियों और पाठ में उल्लिखित दादू की पंक्तियों की तुलना करो।

2. कबीर, रहीम और वृंद के उन नीतिपरक दोहों का संकलन करो जिनमें मीठा बोलने, परनिंदा न करने, प्रेम और विनम्रतापूर्ण व्यवहार करने की बातें कही गई हैं।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

काँच	=	शीशा
प्रतिध्वनि	=	टकराकर लौटी हुई ध्वनि
गश खाना	=	बेहोश होना, मूर्छित होना
मिसाल	=	उदाहरण
बरताव	=	व्यवहार
ऐब	=	दोष, बुराई
नुक्ताचीनी	=	दोष निकालना, आलोचना
शहतीर	=	लकड़ी का लंबा लट्ठा
अमल	=	आचरण, व्यवहार
टीका-टिप्पणी	=	आलोचना
आग बबूला होना	=	बहुत गुस्सा करना, गुस्से से लाल होना
सरासर	=	पूरी तरह
आइंदा	=	भविष्य में, आगे
सेवाग्राम	=	वर्धा में स्थित गांधी जी का आश्रम
सीमेंट का काम करना	=	जोड़ने और मिलाने का काम करना
मीठी चुटकियाँ लेना	=	हँसी-हँसी में व्यंग्य करना।
ग्रीस	=	यूनान देश।
सुकरात	=	प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक।
निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै विचारा। आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे॥	=	निंदा करनेवाला मनुष्य बड़ा वीर है। जो अपने विचारों को बिना कोई कीमत लिए प्रकट करता है। ऐसा करने में भले ही वह स्वयं डूब जाता है, अर्थात् दूसरों की बुराई करने का दोष अपने ऊपर ले लेता है, परंतु दूसरों को उनकी बुराई का ज्ञान करा देता है। ऐसा व्यक्ति प्रिय है क्योंकि वह सबका कल्याण करता है।